सत्र-2017

20 पृष्ठीय

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
Hindi (General)	4 0 1	English

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

सरल क्रमांक

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

1	7	1	4	4	1	1	7	1	X

शब्दों में

एक	सात	एक	चार	चार	एक	एक	सात	एक	X

उदाहरणार्थ 1 1 2 4 3 9 5 6 8

[redacted]

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 02 शब्दों में दो

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 04

ग :- परीक्षा का दिनांक 27 03 17

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हाई स्कूल

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होले क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
हरवंश ठाकुर (व.अ) शा.उ.मा.विद्यालय आरोन परी.क्र.-781702	श्रीमती एस. सोपचे (अध्या) शा.क.मा.विद्यालय सिरोंज परी.क्र.-781655

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

B.L. RANA 781767

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक शब्दों में

कुल प्राप्तांक अंकों में

② [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 2

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक-1 का उत्तर

सही विकल्प

उ०(i) (ब) दुर्लभ

उ०(ii) (अ) नायाब तहसीलदार

उ०(iii) (स) यामिनी

उ०(iv) (द) भक्त और भगवान का

उ०(v) (अ) भारतेन्दु युग

प्रश्नक्रमांक-2 का उत्तर

रिक्त स्थान

उ०(i) षट्:

उ०(ii) तत्पुरुष

उ०(iii) मृणालिनी

उ०(iv) श्री राम शर्मा आचार्य

उ०(v) शंखोच्चार

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 3 का उत्तर

सत्य/असत्य

उ0(i) सत्य

उ0(ii) असत्य

उ0(iii) सत्य

उ0(iv) असत्य

उ0(v) सत्य

प्रश्नक्रमांक - 4 का उत्तर

सही जोड़ी

(i) उत्थान — (द) पतन

(ii) अतिथि — (क) मेहमान

(iii) गीता के श्लोक — (ब) सात सौ

(iv) दुष्यन्त कुमार — (स) गजल

(v) खण्डहर के हृदय सी — (य) आदमी की पीर

5

4 [ ] + [ ] = [ ]
पृष्ठ 4 के कुल

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्नक्रमांक-5 का उत्तर

एक वाक्य

उ०(i) कलिंग की महारानी आमिता थी।

उ०(ii) द्विवेदी जी को सरस्वती पत्रिका से बीस रुपये प्रतिमाह (और तीन रुपये डाकखर्च) की आमदनी होती थी।

उ०(iii) धर्म, दर्शन, साहित्य, कला संस्कृति के अंग है।

उ०(iv) उत् + चारण (व्यंजन सन्धि)

उ०(v) "रिक्शा" पुर्तगाली, जापानी भाषा का आगत शब्द है।

प्र०6 का उत्तर

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने अपने निबंध "संस्कृति का स्वरूप" में बताया है कि धर्म से ही मनुष्य का कल्याण होता है। धर्म से ही व्यक्ति प्रगति करता है। धर्म मनुष्य को उन्नति का मार्ग दर्शाता है। इनसे मनुष्य लगातार उन्नति के मार्ग पर बढ़ता चला जाता है।

इस प्रकार धर्म का मर्म हुआ स्वार प्रयत्नपूर्वक अपने आप को ऊँचा बनाना है।

प्र० 7 का उत्तर

भारत का दक्षिणी भाग अपने प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण है। यहाँ हमें प्रकृति का मनोरम रूप देखने को मिलता है। कन्याकुमारी, तामिलनाडु प्रदेश में स्थित है और गौश्रीनगर (कोचीन) केरल प्रदेश में स्थित है। ये दोनों ही अपनी प्रकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण हैं।

प्र० 8 का उत्तर (अथवा)

हिन्दी में उपन्यास सम्राट 'मुंशी प्रेमचन्द' को कहा जाता है। उनके उपन्यास बहुत ही अद्भुत और सार्थक हैं। उन्होंने उपन्यास विधा ~~की~~ के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

प्रेमचन्द के दो श्रेष्ठ उपन्यास 'गोदान' तथा 'गबन' हैं।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्र०9 का उत्तर (अथवा)

आत्मकथा	जीवनी
1. आत्मकथा में लेखक स्वयं के जीवनवृत को लिखता है।	1. जीवनी में लेखक किसी अन्य के जीवनवृत को प्रस्तुत करता है।
2. आत्मकथा में सत्य का ही अंकन करना होता है।	2. जीवनी में दूसरे के जीवनवृत के तथ्यों की सत्यता निश्चित नहीं होती।

प्र० 10 का उत्तर (अथवा)

पर्यायवाची

(i) चन्द्रमा – चाँद, मयंक

(ii) पत्थर – प्रस्तर, पाषाण

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL
मध्यप्रदेश
क्र.

प्र० 11 का उत्तर

विलोम

कीर्ति – अपकीर्ति

कृतज्ञ – कृतघ्न

प्र० 12 का उत्तर

वाक्यांश के लिए एक शब्द

(i) जिसका अन्त न हो = अनन्त

(ii) जो आसानी से प्राप्त हो जाता है = सुलभ ~~है~~

प्र० 13 का उत्तर ~~(अथवा~~

मुहावरे

(i) कागज काला करना (व्यर्थ में कोई कार्य करना।)

प्रयोग –
मोहन को परीक्षा में कुछ आता तो नहीं था लेकिन फिर भी कागज काला कर आया।

8 [ ] + [ ] = [ ]
योग पृष्ठ अंक

प्रश्न क्र.

(ii) टस से मस न होना – अटल रहना

प्रयोग –

ब्रिटिश सरकार की प्रताड़ना के बाद भी महात्मा गान्धि टस से मस नहीं हुए।

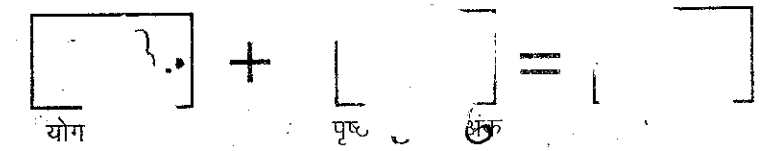

प्र० 14 का उत्तर (अथवा)

वाक्य परिवर्तन

(i) क्या वह अपने घर गया?

(ii) कक्षा में प्रवीण से बुद्धिमान विद्यार्थी कोई नहीं है।

प्र० 15 का उत्तर (अथवा)

रचना के आधार पर वाक्य के तीन प्रकार होते हैं –

(1) सरल वाक्य

(2) मिश्र वाक्य

(3) संयुक्त वाक्य

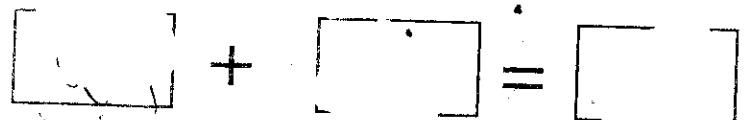

प्र० 16 का उत्तर

भगवान राम के परम भक्ति तुलसीदास यह मानते हैं कि भगवान की भक्ति से ही मनुष्य की सभी चिंताएँ मिट जाती हैं। राम-नाम के जाप से ही मानव का कल्याण सम्भव है। मनुष्य को परम आनंद राम के चरणों में ध्यान लगाने से ही मिलता है। इसलिए तुलसीदास उसी को परमहित मानते हैं जिसमें श्री राम के प्रति प्रेमभाव की बढ़ोतरी हो।

प्र० 17 का उत्तर (अथवा)

कवि रमानाथ अवस्थी ने अपनी कविता 'बरखा गीत' में वर्षा के प्रभाव का उल्लेख किया है। वे कहते हैं कि वर्षा के आने से धरती हरी-भरी हो जाती है। सूखी धरती गीली हो जाती है। वाटिकाएँ सुगंध से महक उठती हैं। इस वर्षा के आगमन से पेड़ों की छाया घनी हो जाती है। बरखा के आगमन से धरती की सुंदरता में चार चाँद लग जाते हैं। यह वर्षा धरती की सुंदरता

योग | पृष्ठ | क

BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

को बढ़ा देती है।

प्र० 14 का उत्तर

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने अपनी कविता 'कर्मवीर' में कर्म की महिमा का वर्णन किया है। जो कर्मवीर होते हैं वे असंभव कार्य को भी संभव कर देते हैं। उनके कर्म में इतनी शक्ति होती कि वे पर्वतों को काटकर सड़कें तैयार कर देते हैं। तपते हुए रेगिस्तान में जहाज चला देते हैं। सुनसान जंगलों में महान आनंद की स्थान कर देते हैं। वे अपने कर्म के द्वारा कोयले को हीरा और पत्थर को रत्न बना देते हैं। वे अपने कर्म के द्वारा यह सब कर पाते हैं। कर्म में विश्वास रखने वाले वीर ही ऐसे अद्भुत कार्यों को अंजाम दे सकते हैं।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL
प्रश्न क्र.

प्र० 19 का उत्तर

श्री राम शर्मा आचार्य ने अपने निबन्ध 'हँसिए और स्वस्थ रहिए' में बताया है कि आज अति व्यस्तता ने मानव जीवन को बहुत प्रभावित किया है। आज इंसान के पास हँसने को समय ही नहीं है। समय है तो केवल तनाव, चिंता और परेशानी के लिए। आज का मानव हँसना, खिलखिलाना भूल ही गया है। इसकी वजह से उसके अनेक रोगों ने घेर लिया है जैसे सिरदर्द, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग आदि। जिसके कारण आदमी के अन्दर का आनंद और उत्साह समाप्त हो रहा है। इसलिए मानव को अपने जीवन में काम करने के साथ ही हँसना भी चाहिए।

प्र० 20 का उत्तर

'सूखी डाली' एकांकी में उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने बताया है कि कुटुम्ब एक महान वृक्ष के समान होता है। उन्होंने संयुक्त परिवार का प्रतीक बट वृक्ष को माना है और

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

उसकी डालियाँ, परिवार के सदस्यों को माना है।

वे कहते हैं कि कुटुम्ब एक महान वृक्ष है। जिस प्रकार वट वृक्ष छाया और शीतलता प्रदान करता है वैसे ही मुखिया के संरक्षण में संयुक्त परिवार सुख और शान्ति से रहता है। जिस प्रकार डालियों से पेड़ की छाया घनी होती है वैसे ही परिवार के सदस्यों से उसकी शोभा होती है। छोटी-बड़ी सभी डालियाँ मिलकर वृक्ष की छाया को घना बनाती है वैसे ही परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्य मिलकर जीवन को सुखी बनाते हैं। इसलिए कुटुम्ब एक महान वृक्ष के समान है।

प्र० 21 का उत्तर (अथवा)

सरदार पूर्णसिंह ने अपनी अनुपम कृति 'मजदूरी और प्रेम' में श्रम और मजदूरी की महिमा को उजागर किया है। वे कहते हैं कि 'जब तक मनुष्य

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

सीमित रहकर परम्परागत जीवन जीता है तब तक उसके उठने की संभावना बहुत कम रहती है। खुले वातावरण में बुद्धि और आत्मा को तरोताजा बनाना आवश्यक है। निकम्मे रहकर नवीन चिंतन करते नवीनता का दावा करना व्यर्थ है। परिश्रम करना ही मानव धर्म है। मजदूरी करने वाले को खुदा नजर आने लगता है। मजदूर की अनाव नजर, अनाव आत्मा सहारे रहित जीवन की बोली सीखने पर आदमी को जीवन श्रेष्ठता को प्राप्त कर सकता है।

B
S
E

प्र० 22 का उत्तर

सम्राट अशोक का चरित्र महान है। वह भारत में जन्मे शूरवीर राजाओं में से एक है। अशोक के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:-

महात्वाकांक्षी-

सम्राट अशोक की इच्छाएँ बहुत ऊँची हैं। वे सम्पूर्ण पृथ्वी पर विजय प्राप्त करना चाहते थे। उन्होंने इसके लिए प्रतिज्ञा ली थी।

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

वे विश्वविजयी सम्राट बनना चाहते थे।

वीरयोद्धा -

अशोक एक वीर योद्धा थे। वे विश्व पर विजय प्राप्त करने के लिए बिना किसी डर के निरन्तर युद्ध करते थे। अच्छे-अच्छे राजा उनकी वीरता के सामने अपने घुटने टेक दिया करते थे।

गतिशील चरित्र -

अशोक का चरित्र गतिशील है। परिस्थितियों के अनुसार उसके स्वभाव में परिवर्तन आता है। अमिता के मर्मस्पर्शी प्रश्न उसे परास्त कर देते हैं और उसका हृदय परिवर्तित हो जाता है।

बुद्धिमान -

अशोक एक बुद्धिमान और विवेकशील सम्राट है। वह अहंकार में कार्य नहीं करता। अमिता के अबोध

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न उसे झकझोर देते हैं और हिंसा तथा युद्ध को सदा के लिए त्याग देता है।

इस प्रकार अशोक में महान सम्राट के सभी गुण हैं।

प्र० 23 का उत्तर

पं. श्री रामनरेश त्रिपाठी जी ने अपनी कविता "वह देश कौन-सा है?" में भारत की महानता का उल्लेख किया है और इसकी विशेषताओं को बताया है। वे कहते हैं कि भारत प्रकृति की गोद में बसा हुआ है। इसकी भौगोलिक स्थिति बहुत उत्तम है। उत्तर में स्थित हिमालय, इसके मुकुट के समान शोभायमान है। दक्षिण दिशा के सागर इसके चरणों को धोते रहते हैं अर्थात इसकी वन्दना करते रहते हैं। इसकी धरती बड़ी ही सरल फल-फूल, मेवा, अनाज आदि देती रहती है। यह धरती हमें अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ और रत्न देती है जैसे सोना, चाँदी, लोहा, हीरा, आदि। यहाँ की नदियाँ

प्रश्न क्र.

भूमि को सींचता रहती है। यहाँ के रत्नागर अनेक रत्न प्रदान करते हैं। यहाँ की धरती धन-धान्य से परिपूर्ण है। यहाँ वन, पर्वत, नदियाँ, बाग-बगीचे, पेड़-पौधे यहाँ की सुन्दरता को बढ़ाते हैं। यहाँ हर मौसम में अलग-अलग ऋतुओं का आगमन होता है जो इसके सौंदर्य को और भी निखार देते हैं।

इस देश ने संसार को शिक्षित किया है। उसे मानवता का बोध कराया है। यहाँ के राम, लक्ष्मण, भरत जैसे महानायक विश्व में प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार कवि ने भारत की विभिन्न विशेषताओं का वर्णन इस कविता में किया है।

"भारत की इस महिमा को देख रहा
जग सारा है।

सबसे प्यारा, सबसे न्यारा भारत देश
हमारा है॥"

P.T.O

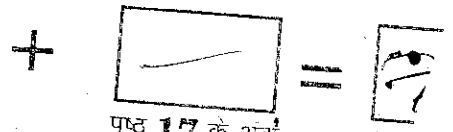

प्रश्न क्र.

प्र० 24 का उत्तर

पद्यांश

संकेत → "इस नदी .... तो है।

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "वासंती" के "इस नदी की धार में" नामक पाठ से लिया गया है। इनके रचयिता श्री दुष्यन्त कुमार जी है।

प्रसंग → इस पद्यांश में कवि ने जीवन के प्रति आशा का भाव जगाया है। यहां कवि ने कष्टों में जीने वाले मनुष्यों के कल्याण की बात कही है।

व्याख्या → कवि कहते हैं कि हमारी जीवन रूपी नदी में भले ही धार क्षीण है लेकिन उससे ठण्डी हवा अर्थात् शान्ति और सन्तोष तो आती ही है। नाव भले ही जर्जर है लेकिन लहरों से टकराते हुए किनारे तक तो पहुँचा ही देती है। वे कहते हैं कि दुःखों और अभावों में जीने वाले लोगों को बस एक सहारे की जरूरत होती है।

(18) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ 18

प्रश्न क्र.

इस जीवन रूपी दिये में आशा रूपी तेल से भीगी बाती तो है बस एक चिंगारी की आवश्कता है। अर्थात कवि प्रेरणा देते हैं कि अगर कष्टों में जीने वाले मनुष्यों को सहारा मिल जाए तो उनका जीवन सुखद बन सकता है।

काव्य सौंदर्य –

1. जीवन में आशा का भाव जगाया गया है।

2. सरल, सुबोध, खड़ी बोली।

3. अनुप्रास अलंकार।

प्र० 25 का उत्तर

अपठित गद्यांश।

30(क) शीर्षक → "संगति का प्रभाव"।

30(ख) इस गद्यांश में बताया गया है कि मनुष्य पर संगति का बहुत असर होता है। अगर वह कुसंग में रहता है तो उसकी

B
S
E

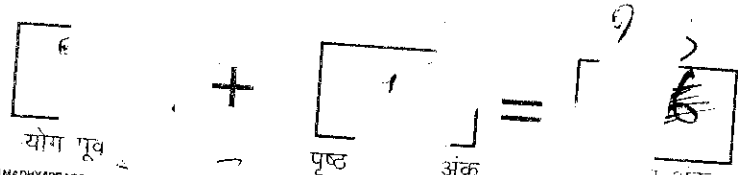

बुद्धि और आचरणों का क्षय होता है। यदि वह सुसंगति में रहता है तो उसके चरित्र का निर्माण होता है और वह लगातार प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ता रहता है।

उ०(ग) कुसंग से न केवल नीति और सद्वृत्ति का नाश होता है बल्कि हमारे विवेक, बुद्धि और आचरणों का भी क्षय होता है और हमारा पतन होता है।

प्र० 26. का उत्तर

पद्यांश

उ०(क) इस पद्यांश में बताया गया है कि हमें कभी रुकना नहीं चाहिए। यदि हम गिरें तो हमें फिर से संभलकर अपनी मंजिल की ओर बढ़ना चाहिए और लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए।

उ०(ख) अंतिम पंक्ति नर के पौरुष और हौसले को बताती है कि हमें कभी घबराना नहीं चाहिए और आगे बढ़ते रहना चाहिए।

उ०(ग) ~~गिर~~ गिरना – उठना।

20

पृष्ठ 20

प्रश्न क्र.

प्र० 27 का उत्तर (अथवा)

पत्र

150 सुरेश नगर,
ग्वालियर (म.प्र.)
दिनांक - 27/03/17

प्रिय सोनम,

सप्रेम नमस्कार।

मैं यहाँ कुशल हूँ और आशा करता हूँ कि वहाँ भी कुशल-मंगल होगा। मैंने यह पत्र तुम्हें परीक्षा के समय स्वस्थ रहने के तरीके बताने के लिए लिखा है। जैसा कि तुम जानती हो कि इस समय सभी कक्षाओं की परीक्षाएँ चल रही है। इस समय तुम्हारा स्वस्थ रहना बहुत जरूरी है। तुम अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखो और नियमित रूप से व्यायाम करो। तुम सुबह उठकर योग और प्राणायाम क्रिया करो। इससे मन शान्त और मस्तिष्क सक्रिय रहता है। तुम अपने सोने और उठने का समय भी निश्चित कर लो। आशा है कि तुम मेरी सलाह मानकर अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखोगी।

तुम्हारा प्रिय भाई
राहुल

माध्यमिक शि... ...यप्रदेश, भोपाल 4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जा...

परीक्षा का विषय	विषय कोड	...क्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
Hindi (General)	4 0 1	English	27 03 17

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक: A- 2275075

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में	1	7	1	4	4	1	1	7	1	x
शब्दों में	एक	सात	एक	चार	चार	एक	एक	सात	एक	x

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक.................................तक कुल प्राप्तांक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESHBHOPAL

प्र० 28 का उत्तर

निबंध - "कम्प्यूटर - आज की आवश्यकता"

रूपरेखा -

1. प्रस्तावना
2. कम्प्यूटर का विकास एवं इतिहास
3. कम्प्यूटर क्या है?
4. कम्प्यूटर - आज की आवश्यकता
5. कम्प्यूटर से खतरा
6. उपसंहार

योग

② योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक = [ ]

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

22275078

प्रस्तावना –

आज मानव ने विज्ञान के द्वारा विभिन्न चमत्कार किए है, उन्ही मे से एक है कम्प्यूटर का आविष्कार। आज का युग कम्प्यूटर का युग है। आज इसका प्रयोग घर, बाजार, विद्यालय, कार्यालय, बैंक उद्योगों सभी जगह हो रहा है।

कम्प्यूटर का विकास एवं इतिहास –

कम्प्यूटर का आविष्कार बहुत पुराना है। यह बात 1000 ई. पूर्व की है जब जापान मे एबेकस नामक यन्त्र का आविष्कार हुआ। इसके द्वारा गणित के सवाल हल किए जाते थे। फ्रांस मे एक प्रतिभाशाली युवक का जन्म हुआ जिसका नाम था ब्लेन पास्कल। इसने सन् 1673 मे कम्प्यूटर तैयार किया।

आधुनिक कम्प्यूटर का आविष्कार इंग्लैण्ड के चार्ल्स बैबेज ने सन् 1833 मे किया।

3 [ ] + [ ] = [ ] +
यो. पूर्व पृष्ठ 3 के अंक कु

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

कम्प्यूटर क्यों

कम्प्यूटर एक यान्त्रिक मस्तिष्क है जिसमें अनेक गणित विषयक सूत्रों-तथ्यों का संचालन-कार्यक्रम पहले से ही सम्पादित कर देना पड़ता है। यह बहुत ही कम समय में गणना करके तथ्यों को हमारे सामने प्रस्तुत कर देता है।

B
S
E

कम्प्यूटर-आज की आवश्यकता

कम्प्यूटर आज हर क्षेत्र में आवश्यक हो गया है। इसका उपयोग घरों में, विद्यालयों में, संस्थानों में, उद्योगों में हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में इसने अभूतपूर्व योगदान दिया है। आज हम सारे संसार की जानकारी इसके द्वारा मिनटों में प्राप्त कर सकते हैं। बैंकों कम्प्यूटर की वजह से बैंकों का काम आसान हो गया है। आज हम कहीं पर भी इसके द्वारा पैसे भेज सकते हैं। इसने सूचना-प्रसारण में एक नई क्रान्ति ला दी है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

कम्प्यूटर के माध्यम से हम रेल का टिकट बुक कर सकते हैं, हवाई यात्रा का टिकट रिजर्व कर सकते हैं। प्रयोगशालाओं में इसका उपयोग अन्तरिक्ष के नए-नए रहस्यों को जानने के लिए हो रहा है।

कम्प्यूटर से खतरा-

आज हम कम्प्यूटर पर आवश्यकता से अधिक आश्रित हो गये हैं। यह मानव की तरह कार्य तो कर सकता है लेकिन इंसान की तरह सोच नहीं सकता। यह मानवी भावनाओं से रहित है। कम्प्यूटर कई लोगों का कार्य मिनटों में कर देता है इसलिए इससे बेरोजगारी की समस्या बढ़ रही है।

इसमें आँकड़ों में हेर-फेर का खतरा भी बना रहता है जो कि सारी मेहनत पर पानी फेर देता है। इसलिए इसका उचित प्रयोग ही आवश्यक है।

B
S
E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
Hindi (General)	4 0 1	English	

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक A- 2275143

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: 1 7 1 4 4 1 2 7 1 x

शब्दों में: एक सात एक चार चार एक दो सात एक x

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

राजकुमार

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक.................................तक कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

EDUCATION,MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

B S E

उपसंहार -

कम्प्यूटर का प्रयोग कीजिए, मगर सावधानी से। आवश्यकता से अधिक इस पर आश्रित होना मानव मस्तिष्क की अवहेलना करना है।

हमें इसका सही प्रयोग ही करना चाहिए। इसको स्वामी न मानकर सेवक की तरह अंगीकार करना चाहिए। आज कम्प्यूटर हमारे देश के विकास में सहायता कर रहा है और इसी के द्वारा भारत एक दिन विकसित देशों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलेगा और लगातार प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेगा।

पृष्ठ के अंकों का योग

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र. 3 ब

रूपरेखा - जनसंख्या वृद्धि।

1. प्रस्तावना।
2. जनसंख्या वृद्धि की समस्या
3. जनसंख्या वृद्धि के कारण
4. जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव
5. जनसंख्या वृद्धि की भारत में स्थिति
6. समस्या का समाधान
7. उपसंहार।

BSE